IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 08, 2021

दिनकर के निबंधों में कला एवं कलाकार -एक झाँकी

डॉ.ए.के बिन्दु,

एसोसिएट प्रोफसर, हिन्दी विभाग, महाराजा कॉलेज,एरनाकुलम

भूमिका

प्रत्येक लेखक या कलाकार का अपने समय के साथ सरोकार होना चाहिए जिसका पालन संसार के सभी बड़े लेखकों ने किया है। अपने समय या अपने युग के लिए लिखने का अर्थ है अपने युग के मूल्यों की रक्षा करना अथवा उन्हें बदलने का प्रयास करना और इस प्रयास के क्रम में हम वर्तमान से निकलकर भविष्य की ओर बढ़ते रहें। राष्ट्रीय एकता भी इससे सम्भव होती है। दिनकर के शब्दों में कहें तो 'कला और साहित्य की रचना कवि या कलाकार का केवल आत्मनिष्ठ कार्य नहीं होता, प्रत्युत् उस पर उन लोगों की रुचि का भी प्रभाव पड़ता है, जो कवि के मुख्य श्रोता या पाठक होते हैं। जिस कवि को श्रोता या पाठक नहीं मिलते वह असमय मौन हो जाता है।' वस्तुतः सच्ची कला सदा जीवित रहेगी तथा सच्चा कलाकार अमर रहेगा। आज कला संकट में है। कलाकार को इस संकट से मुक्त होने की अत्यन्त आवश्यकता है।

बीज शब्द कला , कलाकार ,दिनकर, भारतीय संस्कृति, संस्कृति के चार अध्याय ,मानवता, अनुभूति, संकट

मूल आलेख

'साहित्य को हम जीवन की व्याख्या मानते आए हैं। किन्तु जीवन और उसकी इस व्याख्या के बीच एक माध्यम है, जो व्याख्याता, कवि या कलाकार का निजी व्यक्तित्व है।" यह कथन हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार दिनकर का है। उनका यह अहम् ही उन्हें तत्कालीन साहित्यकारों की श्रेणी से अलग रखता है। इसी अहम् के परिणामस्वरूप वे निर्भीक और स्पष्टवादी बने। समाज में जहाँ भी उन्हें अपने विचारों के प्रतिकूल कोई घटना घटित होती दिखाई देती है वहीं उनका स्वर मुखर और लेखनी क्रियाशील हो उठते हैं। अतः दिनकर का स्वतन्त्र व्यक्तित्व एक कवि व्यक्तित्व की कामना करता है जो कि उपयोगितावाद के घेरे से निकलकर अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व का प्रतिपादन कराता है।

दिनकर की बहुत चर्चित पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' में उन्होंने भारतीय संस्कृति पर विचार किया है तो रेती के फूल, मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर, वेणुवन, उजली आग जैसे निबन्धों में दीगर विषयों पर अपना विचार व्यक्त किया है। इन निबन्धों में दिनकर का आलोचक रूप ही अधिक मुखरित हो उठा है। इनमें कला तथा कलाकार सम्बन्धी दिनकर का दृष्टिकोण अत्यन्त प्रबल है। कला मानव मन के नैसर्गिक उन्मेप का सुपरिणाम है। समाज की अनुभूतियाँ और उसका संघर्ष ही कला है। वह समाज की अक्षय और अमर शक्ति है। हो, कलाकार भी सामाजिक प्राणी होता है, इस नाते उस पर सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव भी पड़ता है। सच्चा कलाकार जड़ विश्व को अपने स्वप्न के रंग से रंगनेवाला चित्रकार तथा दृश्य और अदृश्य के बीच का वह सेतु है, जो मानवता को देवत्व की ओर ले जाकर अलौकिक आनन्द प्रदान करता है। 'जहाँ न जाय रवि, तहाँ जाय कवि' इस कहावत का समर्थन दिनकर ने 'कला धर्म और विज्ञान' नामक निबन्ध

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 08, 2021

में अत्यन्त तटस्थता के साथ यूँ प्रस्तुत किया है-"जो भाव जनसाधारण के अन्तर्मन में छिपा रहता है, उसका पता जनसाधारण से पूर्व उसके लेखकों और कवियों को चल जाता है। अपने जानते ये कलाकार इन भावों के अत्यन्त सूक्ष्म रूप को पकड़ते हैं एवं उन्हें अपनी रचनाओं में स्थान देते हैं।" यहाँ जाहिर है कि एक सच्चा कलाकार मनुष्य के अन्तर्मन में झाँककर, उसे अपनी लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत करता है और उस तह तक पहुँचता है जहाँ और कोई पहुँच नहीं पाता। यहाँ कलाकार की क्रान्तदर्शिता पर दिनकर जी इशारा कर रहे हैं।

दिनकर के शब्दों में कहें तो सच्चा कलाकार अतीत की स्मृति, भविष्य की आशा और युग-धर्म की पुकार है। समाज की असंगतियों को साहित्य में अभिव्यक्त करना एक सच्चे कलाकार का कर्तव्य है। इन बुराइयों से कवि सचमुच मन से लड़ता है, तन से नहीं। याने कलाकार का औजार अस्त्र नहीं अभिव्यक्ति है। 'कलाकार' नामक निबन्ध में कवि की अन्तरात्मा के अनेक प्रश्नों का उत्तर दिया गया है। यहा कवि की अन्तरात्मा हृदयपक्ष का और मन बुद्धिपक्ष का रूप धारण करता है। यहाँ आत्मा पूछती है-'क्रान्ति की आग में कभी जलने भी गया? तब मन उत्तर देता है कि बात बताने को कह सकता हूँ कि तन नहीं मन जला है। मगर सच्ची बात तो यह है कि आग लगने पर हमें बाल्टी उठाकर पानी लेने के बदले अच्छे-अच्छे शब्दों में अग्निदाह का वर्णन करना ही अच्छा लगता है।' यहाँ वैयक्तिक स्तर पर क्रान्ति की तीक्ष्णता का अनुभव कवि ने किया है। लेकिन तन से नहीं मन से। यहाँ एक समस्या उठती है कि समाज की समस्याओं का प्रत्यक्ष रूप से नजरअन्दाज करके सिर्फ लोगों के मन में क्रान्ति जगाना क्या उचित है? इसका जवाब भी यह हो सकता है कि सामाजिक व्यवस्था के लिए एक पृष्ठभूमि तैयार करना ही कलाकार का उद्देश्य है। प्रत्यक्ष लड़ाई नहीं, वरन् प्रतिशोध का आह्वान देना है। 'समकालीन सत्य से कविता का वियोग' शीर्शक निबन्ध में दिनकर यह भी जोड़ता है कि 'अगर कोई कलाकार कला की अकर्मण्यता में ही गौरव समझता हो अथवा आत्माभिव्यक्ति में ही कला का चरम महत्त्व मानता हो तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि उसने समाज और वस्तु-जगत् के सामने अपनी पूरी पराजय स्वीकार कर ली है।'

कलाकार के व्यक्तित्व के आधार पर क्या कला का मूल्यांकन करना उचित है? इस प्रश्न का उत्तर दिनकर ने 'कला तथा आचार' शीर्षक निबन्ध में एक छोटी कहानी के जरिए व्यक्त किया है। 'उजली आग' संग्रह के प्रत्येक निबन्ध में दिनकर आरम्भ में एक सुन्दर छोटी-सी कहानी कहकर अन्त में उसका सार प्रस्तुत करते हैं। एक प्रसिद्ध कवि कुस्थान में मारा गया। हफ्तों अखबारों में चर्चाएँ चलती रही और हफ्तों लोग शोक सभाएँ करके कवि को श्रद्धांजलियों अर्पित करते रहे। बाद में उसके नाम पर स्मारक बनाने का निश्चय नगरवासियों ने किया और वे पैसा इकट्ठा करने के लिए गाँव जाते हैं। ये गाँववासी एक ऋषि से पूछकर ही सब कुछ करते थे। गाँववालों की सात्विक जिज्ञासा देखकर ऋषि बोले- 'दुनिया का मन किसी प्रेत की अधीनता में जाकर सब कुछ भूल गया है। यह आदमी जो मरा है, बहुत बड़ा कवि बा, मगर सरस्वती का यह उजागर बेटा एक वेश्या के घर में एक प्रतिद्वन्द्वी प्रेमी के हाथों वासना की गोद में शहीद हुआ। यहाँ स्पष्ट होता है कि एक कलाकार का मूल्यांकन कला के आधार पर है। न कि उसके व्यक्तित्व के आधार पर। साथ ही ऋषि के मुँह से दिनकर यह सवाल भी पाठक के समक्ष रखते हैं कि-'पाप की पूजा करनेवाले लोग समाज के माथे पर क्यों हैं? यहाँ परोक्ष रूप से दिनकर यह व्यक्त करता है कि कलाकार को भी अपने आचरण की शुद्धता की कसौटी पर खरा उतरना है। कलाकार के हृदय की सड़ी गली भावनाओं की दुर्गन्ध उसकी कला

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 08, 2021

को भी मलिन बनाएगी।

धन, कीर्ति और अधिकार सफलता के तीन प्रतीक हैं। आचार्य मम्मटू के 'काव्यं यशसे' उक्ति का समर्थन करते हुए दिनकर बताते हैं कि आज कलाकार की सफलता की कसौटी का आधार 'यश' है। लेकिन कवियों से हम पूछ लें तो वे उत्तर देते हैं कि कविता प्रसिद्धि केलिए लिखते नहीं, बल्कि आत्मसुख के लिए लिखते हैं। 'कलाकार की सफलता' नामक निबन्ध में इसका स्पष्टीकरण उन्होंने इस प्रकार किया है- 'प्रत्येक कवि सुयश चाहता है। क्योंकि प्रशंसा कलाकारों की प्रतिभा का मुख्य आहार है और प्रशंसा भी कलाकार उनके मुख से चाहते हैं जो समाज के शिष्टा एवं सुसंस्कृत सदस्य है।" यहाँ स्वान्तः सुखाय को दूतासते हैं जो समाज के यह सच है कि कलाकार, नेता, गृहस्थ का तो कहना ही क्या, बड़े-बड़े योगी और महात्मा सुयश के पीछे दौड़ते-फिरते हैं और उनमें सुयश की कामना के साथ अपने प्रतिद्वन्द्वियों से ईर्ष्या और डाह भी होती है। 'कलाकार की सफलता' में दिनकर कहते हैं कि-'एक कवि की सुयश वृत्ति से दस कवि जिस प्रकार जलने लगते हैं तथा साहित्य में जो भयानक जहरीला धुआँ फैलने लगते हैं, उससे सुयश भी कभी-कभी यशस्वी कवि के क्लेश का ही कारण बन जाता है। रवीन्द्रनाथ टागोर को जब नोबेल पुरस्कार मिला था, तब बंगाल के साहित्यिक दल बाँधकर उनका सत्कार करने गए। उस अवसर पर उन्होंने कहा 'कवि के काव्य से कहीं धूप और कहीं छाया उत्पन्न होती है और जिनके हृदय में छाया उत्पन्न होती है ये कवि पर भाँति-भाँति से प्रहार करते हैं।' यहाँ एक असफल कवि की व्यथा नहीं कीर्ति की वेदना है। सच्चे अर्थों में एक कलाकार की सफलता की कसौटी उनकी क्रान्तियों से समाज आन्दोलित हुआ या नहीं इस पर आधारित है।

दिनकर कलाकारों में अधिकार लिप्सा की भावना भी देखते हैं। उनके अनुसार राजनीति की गहराई में जाने केलिए जिन गुणों की जरूरत होती है, उनमें से अनेक ऐसे गुण है जिनका कलाकार के मौलिक गुणों से प्रत्यक्ष विरोध है। 'कलाकार की सफलता' निबन्ध में उन्होंने यह व्यक्त किया है- "नए संसद की स्थापना के बाद अपने देश के भी कुछ कवि, लेखक, चिन्तक और कलाकार संसद अथवा विधानसभाओं के सदस्य बनाए गए हैं, जो एक प्रकार से सत्ता के समीप पहुँचने का ही दृष्टान्त है।" जहाँ कलाकार को अपनी भावनाओं और विचारों से अवगत होने का मौका मिलता है वहाँ कलाकार अर्थ के व्यामोह में भी फंसकर रह जाता है। याने कलाकार व्यवसायी हो जाता है। कला-सृजन उसकी रोटी-रोजी और आधुनिक सुविधाओं को प्राप्त करने तक सीमित रह जाता है। कलाकार भी राजनीतिक दलबन्दी में घिर कर रह जाता है। यही कारण है कि वह अपेक्षा के अनुकूल समाज में परिवर्तन, संवर्धन, परिष्कार और उदात्त रूप की स्थापना नहीं कर पाता।

वाल्मीकि को काव्य रचना की प्रेरणा क्रौंच मिथुनों में से एक ही हत्या होने पर मिली और उन्होंने रामायण की रचना कर डाली। दिनकर भी इसी प्रेरणा को महत्त्व देते हुए कहते हैं कि एक सच्चा कलाकार वही होता है जो प्रेरणा पाकर अपनी रचना का सृजन करता है। 'कला के अर्धनारीश्वर' निबन्ध में दिनकर ने कहा है- "प्रेरणा की लहर पर चलनेवाले कवि पण्डितों के हाथों ज्यादा नम्बर पाने के उद्देश्य से अपने आपको धारा विशेष के साथ बाँधकर नहीं रख सकता।' जहाँ वह प्रेरणा पाकर लिखनेवाले लेखकों को सही मायने में कलाकार मानते हैं, वही दूसरी ओर उनके निबन्ध 'समकालीन सत्य से कविता का वियोग' में यह दिखाया गया है कि 'कवि की आज की अवस्था उस बालक की सी है जो दुःख, त्रास और कोलाहल से भरे

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 08, 2021

हुए घर को देखकर कुछ सहायता करना चाहता है। लेकिन दुःख के कारणभूत अज्ञेय शक्तियों को देखकर चुप रह जाता है। वह कुछ बोलना तो चाहता है। लेकिन इस भय से नहीं बोल पाता कि लोग उसे डाँटकर चुप करा देंगे।' इसका निष्कर्ष यह निकाल सकते हैं कि अपने युग में रहते हुए जो कलाकार अपने समय से दूर पड़ जाता है वह उसकी असफलता ही व्यक्त करता है। दिनकर यह भी जोड़ता है कि आज समाज से कला तथा कलाकार का लोप हो रहा है। कला केवल मनोरंजन मात्र रह गई है। 'समकालीन सत्य से कविता का वियोग' में उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि 'आधुनिक काव्य को जनता जनार्दन के सामूहिक प्रेम का प्रत्ताद पाने में बड़ी कठिनाई हो रही है और जिन पण्डितों के सहारे उसे यह प्रसाद मिल सकता था, वे भी उसे थोड़े से विशेषज्ञों की ही सम्पत्ती बतला रहे हैं। कवि चिन्तित हैं कि उसकी वाणी का पहला प्रभाव क्या हुआ? जनता को आश्चर्य है कि कवि की वाणी हैं या किसी अन्य जीव की।' यहाँ समाज कवि या कलाकार से शिकायत करता है कि क्या उसने जनता को देखा नहीं? युग के सामने भी यही समस्या उत्पन्न हुई है कि संघर्ष के मार्ग पर काव्य उसे जअकेले छोड़कर उनके प्रश्नों को देखता तक नहीं हैं? यह भी देखता नहीं कि किस वेग से वह आपादमस्तक हिल रहा था? समाज जब बुलन्द समस्याओं का सामना कर रहा था, उस समय कवि सोता रहा। लेकिन जब उसकी आँखें खुली प्रचण्ड शक्तियाँ अपना काम कर चुकी थीं।

साहित्य का कला में अतीत, वर्तमान और भविष्य इन तीनों का प्रतिफलन होता है। 'कला के अर्धनारीश्वर' निवन्ध में दिनकर बताते हैं-'आज के चुयले विचार कल प्रकाशमान होंगे और कल जो चिनगारियाँ मन्द एवं प्रच्छन्न थी, वे ही आज किरणों बनकर चमक रही हैं।' यहाँ दिनकर ने कला को परम्परा तया आधुनिकता से जोड़कर देखने का प्रयास किया है। उनके अनुसार परम्परा से ही वर्तमान की प्रतिष्ठा होती है। इन तीनों के सामंजस्य से ही सत्यं, शिवं, सुन्दरं की स्थापना होती है। कला की उपयोगिता पर दिनकर ने 'दृश्य और अदृश्य का सेतु शीर्षक निबन्ध में यों कहा है कि कला सुन्दर के साथ सत्य भी होती और सत्य के साथ उपयोगी भी। अन्यथा इसका अस्तित्व ही विलीन हो जाये।' भारत की राष्ट्रीय एकता को कायम रखने के लिए सत्यं, शिवं, सुन्दरं की परिकल्पना बहुत आवश्यक है। कला के माध्यम से इसकी पूर्ती हो जाती है। लेकिन आज की अधिकांश कला मात्र कुछ घण्टों की जिन्दगी जीती है। उसमें तप नहीं है, सच्चाई नहीं है। वह तात्कालिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर मात्र वर्तमान को देखती है। उसमें भी उसका नजरिया पक्षपातपूर्ण होती है। दरअसल कलाकार राजनीति की भूमिका ओढ़ लेना चाहता है; जो उसके ही नहीं, अपितु आनेवाले कल के साथ न्याय नहीं कर डिपाती है। इससे समाज में अन्याय बढ़ता है। अत्याचार खुले आम सिर उठाते हैं और समाज व देश दोनों ही गलत रास्ते के राही बन जाते हैं। आज आवश्यकता है कि ऐसे कलाकार सामने आएँ जो तप कर सकें और त्रिकाल को तप की शक्ति से देखकर कला-सृजन कर सकें।

आज कला का लक्ष्य यह हो गया कि शैली के द्वारा जनता को विस्मृत करें अनेन कि जनता तक अपनी बात को पहुँचाएँ।यहाँ अनुभूतियों के साथ उसका संप्रेषण नहीं होता।दिनकर के अनुसार 'साहित्य में विस्मय का चिह्न बनाना उनका कार्य है।'कला का लक्ष्य मानवता की प्रतिष्ठा है।आज साहित्य के कई नूतन ध्येय हमारे सामने हैं।दिनकर कहते हैं-'भूखे मनुष्य के सामने रोटी के बदले दर्शन और कविता परोसना निर्दयता का कार्य है,किन्तु यह भी सत्य है कि रोटी खा लेने के बाद मनुष्य कला और विचार खोजता है,मिट्टी

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 08, 2021

से छूटकर वायु में विचरण करना चाहता है।'भूख को मिटाने का काम कलाकार का नहीं, बल्कि उसके कारणभूत तत्त्वों से उसे अवगत

कराने का कार्य कलाकार का है।

<u>संदर्भ ग्रंथ -</u>

संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर

रेती के फूल-दिनकर

मिट्टी की ओर-दिनकर

अर्धनारीश्वर-दिनकर

वेणुवन-दिनकर

उजली आग-दिनकर